अण्डमान निकोबार
द्वीप समाचार

मानस मंथन

जब मिले तो मित्र का आदर करो, पीठ पीछे प्रशंसा करो और आवश्यकता पड़ने पर निस्संकोच सहायता करो।

– अरस्तु

नजरिया

सत्य

धर्म के दस लक्षणों में सत्य का नवम् स्थान है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि सत्य कल्याणकारी और सुन्दर होना चाहिए। तभी वह लोकोपकारी होगा। शास्त्रों में उल्लेख है-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥

मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य बोले, प्रिय बोले, अप्रिय सत्य को न बोले और असत्य प्रिय को भी न बोले। यही सनातन धर्म है। अच्छे मित्र की पहचान है कि वह हमें सत्य की ओर ले जाये और असत्य से हमारी रक्षा करे।

ऋग्वेद के अनुसार-ऋतं पिपर्ति अनृतं नि तारीत्। सत्य को ऋत भी कहते हैं और सत्य को बढ़ाने वाली वाणी ऋतम्भरा कहलाती है। मनुस्मृति में उल्लेख है- नास्ति सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम्। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है।

सारा विज्ञान और अध्यात्म सत्य की खोज में लगा है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है-सत्यं वै चक्षुः। सत्यं हि प्रजापतिः।

सत्य ही चक्षु है और सत्य ही भगवान् है। उपनिषद में स्पष्ट उल्लेख है-सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः।

सत्य की ही जय होती है असत्य की नहीं। कई बार एक असत्य को छुपाने के लिए कई असत्य बोलने पड़ते हैं। सत्य में शक्ति और आस्था होती है। लेकिन ऐसा सत्य जिससे किसी को पीड़ा हो उसे बोलने की शास्त्रों ने मर्यादा सिखाई है।

भगवान् श्रीराम सत्य और मर्यादा के पूर्ण परिपालक हैं। इसका भाव यही है कि उन्होंने सत्य के साथ भी मर्यादा का पालन किया है। वे कभी भी अपने शत्रु को अपशब्द या ऐसा सत्य नहीं कहते जिससे उसे पीड़ा/ कष्ट हो। इसीलिए श्री राम शत्रु के भी मित्र हैं। वे रावण,बाली आदि दुष्टों को भी पूरा सम्मान देते हैं और उनके अपशब्द बोलने पर भी कभी उद्वेजित नहीं होते। सत्य बोलने वाले सहनशील भी होते हैं। सहनशीलता सत्य का आभूषण है।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र अपने सत्य के साथ अपने कर्तव्य का पालन भी करते हैं। इसलिए वे सर्वोत्कृष्ट हैं। सत्य के साथ परिस्थितियां भी जुड़ी रहती हैं। व्यक्ति के बल सत्य बोलने का अभिमान करके अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाये तो वह न समाज के लिए, न देश के लिए उपयोगी कहलायेगा।

प्रोफेसर चन्द्रशेखर वेंकट रमन(1888–1970)

डॉ. टी.सी. खत्री

28 फरवरी का दिन भारतीय वैज्ञानिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा गया है क्योंकि इसीदिन प्रो. सी. वी.रमन को 1930 में नॉबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। प्रो. रमन भारत के प्रथम नॉबल पुरस्कार पाने वाले वैज्ञानिक थे। यह पुरस्कार उनकी नवीनतम प्रकाश खोज 'रमन प्रभाव' (Raman Effect) पर दिया गया था। यह वह समय था जब भारत–अंग्रेजों का गुलाम था। वैज्ञानिक परिस्थितियां प्रतिकुल थी, शोधकार्य के लिये धन व सुविधाओं का अभाव था, वैज्ञानिक जगत में अमेरिका व यूरोपवालों का एकाआधिकार था। ऐसी विषम परिस्थितियों में इस भारत के सपूत ने नॉबल पुरस्कार प्राप्त कर अपने देशवासियों की सम्मान ही वापस नहीं दिलाया बल्की भारतमाता का पहचान पूरे विश्व में अपनी नवीनतम शोध कार्य से फैराया वे अपनी असीम क्षमता का लोहा भी विश्व के वैज्ञानिकों को मनवाया। भरात के इस महान् सपूत को याद करने वे सम्मान देने के लिये सम्पूर्ण भारत में 28 फरवरी को विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि भारत के यूवावर्ग में वैज्ञानिक सोच, परिकल्पना, कार्य शैली व चेतना का संचार किया जा सके।

सी.वी. रमन (1888–1970)

प्रो. रमन का जन्म 7 नवम्बर 1888 में तमिलनाडु के एक गाँव अयनपटैई में हुआ था। 12 वर्ष की उमर में अपनी प्रारभिक स्कूली शिक्षा विशाखापट्टनम में समाप्त करने के पश्चात् मद्रास विश्वविद्यालय से 1907 में एफ.ए.की डिग्री हासील की। महाविद्यालय उन्होने 1922 में डी.एस.सी की डिग्री भौतिकशास्त्र में प्राप्त की 1928 में प्रो. रमन ने इसी विभाग में लगभग 11 वर्षे तक सधन शोध कार्य करके 'रमन इफेक्ट' की खोज की।

15 वर्ष तक कलकत्ता विश्वविद्यालय में कार्य करने के पश्चात् प्रो. रमन बंगलोर के 'इंडियन इस्टीट्यूर ऑफ साइंस' में डायरेक्टर के पद पर 1933 में नियुक्त हुये। 10 वर्षे तक इस संस्थान में अपनी सेवाये देने के पश्चात् प्रो. रमन ने अपने स्वयं के इस्टीट्यूर 'रमन रीसर्च इस्टीट्यूर की स्थापना की जहाँ वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक कार्य करते रहे। 21 नवम्बर 1970 को भारत रत्न प्रो. रमन का शरीर पंच भैतिक तत्वों में वीलीन हो गाया।

प्रो. रमन ने अपना अधिकार समय हीरे के संशलेषण प्रकाश व पद्य संगीत के अध्ययन में व्यतीत किया। उनके प्रमुख क्षमताओं के द्वारा प्रदान की।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के उप–कलपति सर असुतोष मुखर्जी ने मार्च 1914 में प्रो. रमन के बारे में आने विचार प्रकट करते हुए कहा कि सर तारकनाथ पालित द्वारा भैतिकी में बनाये प्रोफर पद के लिये चन्द्रशेखर वेंकट रमन जैसे व्यक्ति की सेवाये हमें उपलब्ध हुई जिन्होंने अपनी विलक्षण शोध कार्य भौतिक विज्ञान में करके अपने आपको यूरोपीय प्रसिद्ध के वैज्ञानिको के समकक्ष लाकर खाड़ा कर दिया है। यह कार्य रमन ने अपने थका देने वाले सरकारी कार्यों को करने के साथ–साथ विपरित परिस्थितियों में किया। प्रो. रमन ने अपने लाभप्रद, अराम दायक, प्रशासनिक वह सम्मानयुक्त पद को त्याग कर प्रोफेसर के पद को स्वीकार करना जिसमें इतना अधिक पैसा भी नही मिलता था। इस बात को प्रमाणिक करता है कि सत्य की खोज पतलून, जूता व दक्षिण भररतीये शैली की पगड़ी पहनते थे। जो उनकी भारतीय पहचान थी। बहुत कम लोग जानते है कि 'जानते हो, मेरा मतलब क्या है? उनका तकियाक लाभ थ जिसे वे एक छोटे के वार्तालाब में अनेक बार प्रयोग करते थे। प्रो. रमन में एक शिशु की सरलता, अनुसंधानकर्त्ता की सनक के साथ सरल स्वभाव, कल्पनाप्रिय सद्भवी व आत्म–प्रदर्शन प्रियता थी परन्तु वे कभी भी महत्वकांक्षी नहीं रहे व घमण्ड जो उन्हें छूतक नहीं पाया था।

अगर रमन 1907 में 'डिप्टी एकाउन्टेट जनरल' बनकर कलकत्ता नहीं आते। सर असुतोष मुखर्जी ने उनकी विलक्षण, 'आलौकिक व सहज ज्ञान की क्षमता को पहचान कर पलीत प्रोफेसर का पद कलकत्ता विश्वविद्यालय के भैतिक विभाग में प प्रदान किया होता (जबकि रमन सिर्फ एम. ए. थे। उनके मुकाबले में दूसरे प्रत्यार्थी विदेशों से डी. एस.सी.किये हुये थे) तब शायद रमन की बहुमुखी वैज्ञानिक प्रतिभा कभी भी पुष्पित व फलवित नहीं हो पाती। रमन महज एक उच्च अधिकारी बनकर रह जरते परन्तु नियती को कुछ और ही मंजूर था। भारतीय सपूत रमन के द्वारा ही दुनिया में भारतीय वैक्षानिक श्रेष्ठता का परचम दुनिया में फेहराना था जो कि उन्होने 1930 नॉबल पुरस्कार प्राप्त कर फहराया।

पायलटों को कैंसर का खतरा

वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि हवाई जहाज के चालक दल के सदस्यों को

ठीक रखें अपनी हार्ड डिस्क की सेहत

हार्ड डिस्क वह चुम्बकीय डेटा स्टोरेज उपकरण है जो आपके कम्प्यूटर के सारे सॉफ्टवेयर व डेटा को स्टोर करती है। इसी में आप अपनी व्यावसायिक व घरेलू एप्लिकेशंस व डेटा, गेम्स, ई-मेल, एड्रेस बुक आदि जैसी महत्त्वपूर्ण जानकारियां रखते हैं। समझने के लिए हार्ड डिस्क को कई खानों वाली एक अलमारी माना जा सकता है जिसके प्रत्येक खाने में विभिन्न वस्तुएं करीने से जमाकर रखी गई हों।

आपके समस्त डेटा को स्टोर करने के कारण हार्ड डिस्क कम्प्यूटर का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग मानी जा सकती है। अतः आपको इसे ठीक से काम करने योग्य व इसकी गति पर्याप्त रूप से तेज बनाए रखने के लिए इसपर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए नीचे दी गई बातों का पालन करें।

1. प्रत्येक व्यावसायिक एप्लिकेशन, डेटा आदि के लिए अलग फोल्डर बनाइए। अपनी फाइल्स को हार्ड डिस्क पर इधर-उधर सेव करने की अपेक्षा उनके लिए निर्धारित फोल्डर में रखिए। इससे आपको दो फायदे होंगे। एक तो आपको यह ज्ञात रहेगा कि आपके पास कौन-कौन सी फाइल्स हैं और ये कहां हैं। इसके अतिरिक्त आपकी डिस्क पर कचरा इकट्ठा नहीं होगा और वह साफ-सुथरी रहेगी। इससे हार्ड डिस्क से डेटा प्राप्त करने व उसपर डेटा लिखने की गति बढ़ जाएगी व आपका कम्प्यूटर अधिक तेज काम कर सकेगा।

2. विण्डोज की मेंटेनेन्स विजार्ड जैसी यूटिलिटीज का प्रयोग करें। यह आपके प्रोग्राम्स का निरीक्षण करके उन्हें तेजी से लोड करता है, हार्ड डिस्क पर किन्हीं समस्याओं को ढूंढकर ठीक करता है व हार्ड डिस्क की स्पेस बढ़ाता है। इसे आप रोज अथवा सप्ताह में कभी भी किसी निर्धारित समय पर स्वतः काम करने के लिए कॉन्फिगर कर सकते हैं। मेंटेनेन्स विजार्ड आपको स्टार्ट > प्रोग्राम्स > एसेसरीज > सिस्टम टूल्स में मिलेगा।

3. विण्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम को काम करते समय टम्परेरी या स्वैप फाइल्स बनाने के लिए बहुत सारी जगह की आवश्यकता होती है। अतः अपनी हार्ड डिस्क पर कम से कम 10 प्र.श. जगह खाली रखें।

4. फाइल्स को कंप्रेस न करें। इससे आपकी हार्ड डिस्क की जगह तो बचती है किन्तु सिस्टम धीमा हो जाता है।

5. नॉर्टन यूटिलिटीज या किसी अन्य प्रकार के सॉफ्टवेयर पैकेज का उपयोग कर अपनी डिस्क का प्रदर्शन सुधारें। ये सॉफ्टवेयर आपको विण्डोज के क्रैश होने या किसी प्रकार विण्डोज रजिस्ट्री करप्ट होने जैसी समस्याओं से भी निजात दिलाएंगे।

6. डिस्क डीफ्रेगमेन्टर का प्रयोग अपने कम्प्यूटर के उपयोग की अधिकता के अनुसार एक या दो माह में करते रहें। यह आपकी हार्ड डिस्क पर बिखरी हुई फाइल्स को तरतीब से जमाकर प्रोग्राम्स के लोड होने की गति बढ़ा देगा। इसके अतिरिक्त सिस्टम से बेकार यूटिलिटीज व प्रोग्राम्स को हटाएं व रीसाइकल बिन को खाली करते रहें।

इन बातों पर अमल कर आप अपनी हार्ड डिस्क की कार्यक्षमता तो बढ़ा ही सकते हैं साथ ही इनसे आपकी डिस्क की उम्र में भी वृद्धि होगी।

भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की सराहना